

**मोटे अनाज : प्रतिरक्षा एवं पोषण सुरक्षा को बढ़ावा देने हेतु
सम्भावनाएं एवं अवसर' वेबिनार सम्पन्न**

मोटे अनाजों में फाइबर एवं अन्य पोषक तत्वों की मात्रा अधिक

प्रतिरक्षा एवं पोषण के लिये मोटे अनाजों की ओर लौटें

किसानों की समृद्धि बढ़ाने में सहायक मोटे अनाज

मोटे अनाजों के लिये नयी हरित क्रान्ति लाने की जरूरत—

श्रीमती आनंदीबेन पटेल

लखनऊ : 14 जून, 2021

उत्तर प्रदेश की राज्यपाल श्रीमती आनंदीबेन पटेल जी ने कहा है कि हर काल बुरा ही नहीं, बल्कि कुछ अच्छे पहलू भी देता है। कोविड-19 महामारी काल में भी एक बात स्पष्ट हुई है कि लोग अपने स्वास्थ्य के साथ खान-पान के प्रति अत्यधिक जागरूक हुए हैं। इम्युनिटी बढ़ाने वाले आहार का सेवन अधिक करने लगे। क्योंकि मोटे अनाजों में फाइबर एवं अन्य पोषक तत्वों की मात्रा अधिक होती है। इस प्रकार हमारे पारम्परिक भारतीय जीवन में प्रयुक्त होने वाली खाद्य सामग्री कोराना काल में उपयोगी सिद्ध हुई है। ये विचार राज्यपाल जी ने आज उत्तर प्रदेश कृषि अनुसंधान परिषद द्वारा अपने 32वें स्थापना दिवस पर आयोजित 'मोटे अनाज : प्रतिरक्षा एवं पोषण सुरक्षा को बढ़ावा देने हेतु सम्भावनाएं एवं अवसर' वेबिनार में व्यक्त किये।

राज्यपाल जी ने कहा कि हम भारतवासियों को कोरोना काल में इम्युनिटी बढ़ाने की जरूरत इसलिये पड़ी क्योंकि हमने देश के पारम्परिक अनाजों जैसे ज्वार, बाजरा, रागी, संवा, कोदों से दूरी बना ली और गेहूं-चावल का अधिक प्रयोग करने लगे। उन्होंने कहा कि यही मोटा अनाज खाकर हमारे पूर्वज लम्बे समय तक जीवित रहें। आज पूरी दुनिया मोटे अनाज की ओर वापस लौट रही है। अन्तर्राष्ट्रीय स्तर पर भी मोटे अनाजों की मांग बहुत तेजी से बढ़ रही है। राज्यपाल ने कहा कि गेहूं एवं चावल जीवन की ऊर्जा एवं शारीरिक विकास की आवश्यकताओं को पूरा करते हैं, परन्तु इम्युनिटी कम हो रही है। इसके परिणाम स्वरूप मानव शरीर में कई प्रकार की दैहिकीय समस्याओं तथा गम्भीर बीमारियों की समस्याएं उत्पन्न हो गईं। यही कारण है

कि आज केन्द्र सरकार भी मोटे अनाजों की खेती पर जो दे रही है। केन्द्र सरकार ने वर्ष 2018 को मोटे अनाज का वर्ष घोषित किया था। और अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर इसकी मांग बढ़ने से अब खाद्य और कृषि संगठन ने वर्ष 2023 को 'अंतर्राष्ट्रीय मोटा अनाज वर्ष' घोषित कर दिया है।

राज्यपाल जी ने कहा कि अब एक ऐसी नई हरित क्रांति लाने की आवश्यकता है, जिससे मोटे अनाजों की पैदावार में वृद्धि हो। इससे जलवायु परिवर्तन, ऊर्जा संकट, भू-जल ह्रास, स्वास्थ्य और खाद्यान्न संकट जैसी समस्याओं से भी निपटा जा सकता है। इसके साथ ही इससे न केवल कृषि का विकास होगा, बल्कि खाद्य सुरक्षा, उचित पोषण और स्वास्थ्य सुरक्षा भी हासिल होगी। उन्होंने कहा कि सबसे महत्वपूर्ण बात यह है कि ये फसलें अब हमारे किसानों की समृद्धि बढ़ाने तथा उनकी आयु को दोगुनी करने में भी सहायक हो सकती हैं।

श्रीमती आनंदीबेन पटेल ने कहा कि उत्तर प्रदेश का बुन्देलखण्ड क्षेत्र तथा दक्षिण-पश्चिम का मैदानी क्षेत्र मोटे अनाजों की फसलों की खेती हेतु सर्वथा उपयुक्त है, जहां कई दशकों से मिलेट्स की खेती की जाती रही है। उन्होंने कहा कि इन क्षेत्रों में पुनः मोटे अनाज के फसलों की खेती को बढ़ाने हेतु सभी सम्भावनाओं की तलाश की जानी चाहिए। उन्होंने कहा कि आज इस प्रकार के अनुसंधान की आवश्यकता है, जिससे इन फसल उत्पादों को सहजता के साथ मूल्य संवर्धन किया जा सकें। राज्यपाल ने विश्वास व्यक्त करते हुए कहा कि यह वेबिनार मिलेट्स फसल उत्पादन का मूल्य संवर्धन एवं नवीन उत्पादों के विकास के साथ प्रदेश की पोषण सुरक्षा में मोटे अनाज की फसलों के प्रासंगिक योगदान के संबंध में प्रचार-प्रसार की महती भूमिका निभायेगा।

इस वेबिनार में उत्तर प्रदेश के कृषि, शिक्षा एवं अनुसंधान मंत्री श्री सूर्य प्रताप शाही, उपकार के अध्यक्ष कैप्टन विकास गुप्ता (से0नि0), भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद के उपमहानिदेशक डा0 तिलक राज शर्मा, उत्तर प्रदेश के महानिदेशक एवं आचार्य नरेंद्र देव कृषि एवं प्रौद्योगिक विश्वविद्यालय, कुमारगंज, अयोध्या के कुलपति डा0 बिजेन्द्र सिंह, भारतीय मिलेट अनुसंधान संस्थान हैदराबाद के निदेशक डा0 विलास ए0 टोनापी, बाजरा जोधपुर के परियोजना समन्वयक डा0 सी0 तारा सत्यवती तथा उत्तर प्रदेश कृषि विभाग के निदेशक डा0 वी0के0 सिंह सहित अन्य अधिकारी, वैज्ञानिक तथा छात्र-छात्राएं जुड़े हुए थे।

